पेज-(1) किसलय पटेल (हिन्दी विभाग)
B.A - I वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर
दिनांक- 27.05.2020

घनआनन्द के पदों के
भावार्थ

(A) घनआनंद रीतियुगीन रीतिमुक्त काव्य-धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। रीतिमुक्त काव्यधारा में यद्यपि प्रेम और शृंगार वर्णन को ही प्रधानता मिलती है लेकिन इस प्रेम और शृंगार में वासना की जगह नाते-नाता मिलती है। आलोचकों ने घनआनंद को छायावादी काव्य-चेतना का पितामह माना है।

घनआनंद का एकमात्र वर्ण्य विषय है - प्रेम। इस प्रेम का पूर्वार्द्ध शुद्ध नायक-नायिका परक शृंगार है तो उत्तरार्द्ध भक्ति से सिंचित। घनआनंद ने अपनी कृष्ण-परक रचनाओं में एक स्वयं भक्त की भांति राधा-

पेज - (2)

कृष्ण के रूप, प्रणय, भक्ति आदि का वैसा ही मार्मिक वर्णन किया है जैसा भक्तियुग के कवियों में मिलता है। सारांशतः घनआनंद के काव्य में भक्ति और शृंगार एक ही सिक्के के दो पहलू बनकर हमारे सामने आते हैं। सुजान का प्रेम ही कृष्ण प्रेम में ढल कर उज्जवल नीलमणि हो गया है।

(1) प्रस्तुत पद में कवि घनआनंद कहते हैं कि उनके काव्य का अर्थ वही समझ सकता है जो महान प्रेमी हो, ब्रजभाषा का विद्वान हो और काव्यशास्त्र के विभिन्न स्वरूपों का ज्ञाता हो। उसके हृदय में संयोग और वियोग की रीति को समझने की शक्ति हो। जिनका हृदय प्रेम-रस से सिक्त हो और जिन्हें अपने बिछड़े प्रेमी से मिले बिना शांति न मिलती हो। इस प्रकार घनआनंद के काव्य की व्याख्या

पेज - (3)

वही कर सकता है जो भाषा के प्रयोग में पूर्णतः दक्ष हो तथा सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो।

(2) प्रेम सदा अति ऊँचो लहै . . .

आँखिन नेह की पीर तकी।

कवि कहते हैं कि प्रेम करना साधारण लोगों के वश की बात नहीं है। इसका मर्म वही जान सकता है जिसका हृदय प्रेम - रस से परिपूर्ण हो। प्रेम का नाम सुनते ही सभी इस ओर आकर्षित होकर दौड़ते हैं किन्तु नजदीक जाने पर उनकी बुद्धि चकरा जाती है। साधारणतः लोग सांसारिक विषयों का वर्णन करने वाली कविता के धोखे में रह जाते हैं। इसलिए बड़े प्रवीणों की बुद्धि भी यहाँ धोखा खा जाती है।

घनानंद कहते हैं कि जिस व्यक्ति का हृदय सच्ची प्रेम पीड़ा की अनुभूति से पूर्ण है और जो अपने

Scanned with CamScanner

हृदय की आँखों से प्रीति को देखता है वही व्यक्ति उनकी कविता के मर्म को समझ सकता है।

(3) पहिले अपनाय सुजान
में यों विष घोरिए जू।

प्रस्तुत पद में नायिका श्री कृतघ्न को संबोधित कर कहती है कि पहले आपने मुझे अपना बना लिया फिर अब उस स्नेह को आप क्यों तोड़ रहे हैं। आपने मुझे निराश्रित जानकर सहारा दिया लेकिन हे कृतघ्न, अब आप मुझे विरह की तेज धारा में क्यों डूबने के लिए छोड़ दे रहे हैं।

अतः अब एक बार आपने हाथ पकड़ लिया है तो अब मुझे डूबने न दें। चातक का जो प्रेम गुण है उसे ध्यान में रख-

Scanned with CamScanner

कर मुझ पपीहे को अपने प्रेम रूपी रस्सी से बाँधे बिना न छोड़ो। आपके प्रेम ने मुझमें आशा और विश्वास देकर प्राण-संचार किया है। अब उस प्रेम की जगह विरह-रूपी विष नहीं घोलिए।

(4) सावरे रूप की रीति . . .
रीझ के ख्यानि हारिए।

नायिका कहती है कि प्रियतम (कृष्ण) के रूप की रीति भी अनुपम है। क्योंकि ज्यों-ज्यों हम उन्हें निहारती है त्यों-त्यों उनका सौन्दर्य नया और अनोखा लगता है। उनकी आँखें और वाणी भी अनोखी है। मैं शपथ लेकर कहती हूँ कि मेरा मन उनका दर्शन से कभी तृप्त नहीं होता।

पेज - 6

नायिका ने स्वयं को अपने प्रियतम पर न्योछावर कर दिया है। प्रिय के दर्शनों से वंचित होने के कारण उसकी पगली आँखें अपनी ही 'रीझ' के हाथों हार मान गई है और कि असमर्थ बनी है।

(5) अति सूधो सनेह - ...
पै देहु छटांक नहीं।

नायिका कहती है कि प्रेम का मार्ग अत्यन्त सीधा है। इसमें किसी प्रकार की चतुराई और कुटिलता के लिए कोई स्थान नहीं है। इस प्रेममार्ग के जो स्वरूप पथिक होते हैं वे अपना मोह ममत्व एवं अहंकार का त्याग कर चलते हैं। लेकिन जो कपटी होते हैं वे इस मार्ग पर चलने में झिझकते हैं।

Scanned with CamScanner